

---

# Shri Jagannatha Navakam

श्रीजगन्नाथनवकम्

## Document Information

---

Text title : Jagannatha Navakam

File name : jagannAthanavakam.itx

Category : vishhnu, pradIptakumArananda, krishna, nava

Location : doc\_vishhnu

Author : (Copyright) Pradipta Kumar Nanda, Kendrapara, Orisa pknanda65 at gmail.com

Transliterated by : Pradipta Kumar Nanda

Proofread by : Pradipta Kumar Nanda

Acknowledge-Permission: (Copyright) Pradipta Kumar Nanda

Latest update : September 7, 2020

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 28, 2020

*sanskritdocuments.org*

---

---

# Shri Jagannatha Navakam

---

## श्रीजगन्नाथनवकम्

---



पारावारपतिः पुरीपुरपतिस्सौभाग्यलक्ष्मीपतिः

श्रीक्षेत्राधिपतिर्मंडेश्वरपतिर्मायापतिर्भूपतिः ।

श्रीवैकुण्ठपतिर्जगज्जनपतिर्माधुर्यलीलापतिः

दारुभ्रमपतिर्मंडामभपतिः कुर्यात्सदा मङ्गलम् ॥ १ ॥

डे नारायण डे जगज्जयदुते डे विश्वबन्धो प्रभो

डे वैकुण्ठसनातन ग्रहपते डे रामनारायण ।

डे नीलायलनायक प्रवण डे डे श्रीजगन्नाथ मां

डे राधाधव पाळि पाळि सततं वन्दामि नन्दात्मजम् ॥ २ ॥

गोलाकाराक्षयुक्ता निम्बिलमणिमयी डेमभूषाङ्गशोभा

श्यामा कामाभिरामा स्वजनसडरता प्रेमधारावडन्ती ।

या सा संसारसारा श्रितजनविषया भ्रमरुपा प्रसन्ना

पायात्संभ्रान्तनीलायलभुवनसुभा अग्रधरा दारुमूर्तिः ॥ ३ ॥

स्वर्णालङ्कृतदिव्यदारुरसिकं श्रीमन्दिराधीश्वरं

विश्वानन्दतनुं विकाररडितं पुर्यां मंडासौरभम् ।

भक्तिप्रेमधनं ददाति परमं लावण्यलक्ष्मीशुभं

श्रीनीलाद्रिमडोदयं प्रतिदिनं सौन्दर्यसारं भजे ॥ ४ ॥

पक्षीन्द्रासीनमग्यं सडलमणियुतं योगमायासमेतं

शङ्खं यडं गदाभ्रं प्रबलबलयुतं बाहुभिः संदधानम् ।

लावण्यं मर्त्यलोके नयनसुभकरं पीतपट्टाभराड्यं

लक्ष्मीनारायणाभ्यं निरुपमयुगलं दिव्यदेहं नमामि ॥ ५ ॥

माधुर्यसाररससारसुभैकसारं

वेदान्तसारसुरसारविद्यग्यसारम् ।

पीयूषसारधनसारसुशीतसारं

श्रीक्षेत्रसारडरिसारसुसारमीडे ॥ ६ ॥

शुद्धं शुद्धमभुद्धमव्ययमजं दान्तं प्रशान्तं भुः

कान्तं सन्ततमन्तकारिमनघोदन्तं मडान्तं परम् ।

नित्यं निर्मलमेकमाद्यमजडं सत्यावबोध्यात्मकं

वन्दे तं कमलापतिं प्रतिदिनं नीलाद्रियूडामणिम् ॥ ७ ॥

डे शीतल प्रियडरे करुणावतार

सौभाग्यदारुसुभकारुडलाभितम ।

श्रीमन्दिशेश नितरां तुलसीदलेडस्मिन्

पत्रं लिभामि पठ माधव पक्षिपत्र ॥ ८ ॥

योगे न भोगसकलेषु सुभेषु नित्यं

त्वन्नामधामविषये ड्वचिदस्ति दृष्टिः ।

ब्रह्माण्डनाथ तव गौरवसौरभाय


येष्टा कदा भवति सा भविता सुबुद्धिः ॥ ९ ॥

धति प्रदीमनन्दशर्मविरचितं श्रीजगन्नाथनवकं समाप्तम् ।


Composed, encoded, and proofread by

Dr. Pradipta Kumar Nanda, Kendrapara, Orisa [pknanda65 at gmail.com](mailto:pknanda65@gmail.com)

---

——  
*Shri Jagannatha Navakam*

pdf was typeset on December 28, 2020

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

